हिन्दी (Elective)– 2017

सभी प्रश्नों के उत्तर दें:

प्रश्न.1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़ें तथा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दें:

महानगरों में जो सभ्यता फैली है, वह छिछली और हृदयहीन है। लोगों के पारस्परिक मिलन के अवसर तो बहुत हो गये हैं, मगर इस मिलन में हार्दिकता नहीं होती, मानवीय संबंधों में घनिष्ठता नहीं आ पाती। दफ्तर, ट्रामों, बसों, रेलों, सिनेमाघरों, सभाओं और कारखानों में आदमी हर समय भीड़ में रहता है, मगर इस भीड़ के बीच वह अकेला होता है। मनुष्यता के लिए जरूरी मनुष्य के भीतर पहले जो माया, ममता और सहानुभूति के भाव थे, वे अब लापता होते जा रहे हैं। देशों के बीच की पारस्परिक दूरी अब घट गयी है, किन्तु आदमी और आदमी के बीच की दूरी बढ़ती जा रही है।

(क) महानगरों की सभ्यता को हृदयहीन क्यों कहा गया है?

उत्तर. महानगरों की सभ्यता हृदयहीन है क्योंकि यहाँ के लोगों में आपसी घनिष्ठता नहीं है।

(ख) मानवीय संबंधों में धानिष्ठता होने का क्या तात्पर्य है?

उत्तर. इसका तात्पर्य एक दूसरे के लिए आत्मीयता, ममता और सहानुभूति से है।

(ग) महानगरों की भीड़ में आदमी अकेला कैसे होता है?

उत्तर. मानव के जीवन में आपसी आत्मीयता, ममता और सहानूभूति के अभाव के कारण वह महानगरों की भीड़ में अकेला रहता है।

(घ) मनुष्यत्व के भीतर किस तरह के भाव होते हैं?

उत्तर. मनुष्यत्व के भीतर माया, ममता और सहानुभूति के भाव होते हैं।

(ङ) गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखें।

उत्तर. महानगरों में फैलता अलगाव।

(च) गद्यांश से प्रत्यय-युक्त दो शब्द चयनित करें तथा प्रत्यय का निर्देश करें।

उत्तर. हृदयहीन - हृदय
हिर्दिकता - ता

प्रश्न.2. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़ें तथा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखें:

न जिसमें कुछ पौरुष हो यहाँ-
सफलता वह पा सकता कहाँ?
अपुरुषार्थ भयंकर पाप है,
न उसमें यश है, न प्रताप है,
न कृमि-कीट समान मरो, उठो,
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो ॥

(क) कवि ने इस पद्यांश में मनुष्य को क्या प्रेरणा दी है?

उत्तर. कवि ने मनुष्य की पुरुषार्थ करने की प्रेरणा दी है।

(ख) सफलता पाने के लिए कवि ने क्या आवश्यक बतलाया है?

उत्तर. कवि ने पुरुषार्थ को आवश्यक बतलाया है।

(ग) कृमि-कीट के समान मरने से कवि का क्या आशय है?

उत्तर. इसका तात्पर्य बिना पुरुषार्थ और परोपकार किए मरने से है।

(घ) 'अपुरुषार्थ भयंकर पाप है'- कैसे?

उत्तर. पुरुषार्थ एक मनुष्य का परम कर्त्तव्य होता है। इस प्रकार, अपुरुषार्थ एक भयंकर पाप है।

(ङ) पद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखें।

उत्तर. 'पुरुषार्थ'

प्रश्न.3. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखें:

(क) साम्प्रदायिकता बनाम धर्मनिरपेक्षता
(ख) नोटबंदी और काला धन का राक्षस
(ग) इंटरनेट का बढ़ता दायरा
(घ) मेरी प्रिय पुस्तक।

उत्तर. (क) साम्प्रदायिकता बनाम धर्मनिरपेक्षता

आज के परिवेश में साम्प्रदायिकता मानवता के नाम पर कलंक है। इतिहास साक्षी है कि साम्प्रदायिकता के नाम पर अनेकानेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भीषण रक्तपात हुआ है। अनेक राज्यों में सत्ता परिवर्तन हुआ है, अनेक राज्यों और जातियों का पतन हुआ है। अनेक देश साम्प्रदायिकता के कारण ही पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ गये हैं। अनेक देशों का विभाजन भी साम्प्रदायिकता के फैलते हुए जहर-पान से ही हुआ है। आज केवल भारत में ही नहीं अपितु सारे विश्व में नहीं पाई गयी तो यह किसी को भी समाप्त करने से बाज नहीं आएगा। साम्प्रदायिकता का जहर कभी उतरता नहीं है। अतएव हमें ऐसा प्रयास करना चाहिए कि यह कहीं किसी तरह से फैले ही नहीं। हमें ऐसे भाव पैदा करने चाहिए जो इसको कुचल सके। हमें ऐसे भाव पैदा करना चाहिए-

मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।
हिन्दी हैं हम वतन है, हिन्दोस्ता हमारा ॥

तथा

चाहे जो धर्म तुम्हारा, चाहे जो वादी हो,
नहीं जी रहे अगर देश के लिए तो भी अपराधी हो ॥

साम्प्रदाय का अर्थ है- विशेष रूप से देने योग्य, सामान्य रूप से नहीं। अर्थ हिन्दू मतावलम्बी के घर में जन्म लेने वाले बालक को हिन्दू धर्म की ही शिक्षा मिल सकती है, दूसरे धर्म की नहीं, इस प्रकार से साम्प्रदायिकता का अर्थ हुआ एक पर्व एक मत, एक धर्म या एक वाद। न केवल हमारा देश ही अपितु विश्व के अपना देश भी साम्प्रदायिकता हैं। अतः वहाँ भी साम्प्रदायिकता है।

इस प्रकार साम्प्रदायिकता का विश्व-व्यापी रूप है। यह विश्व चर्चित है इससे पूरा विश्व प्रभावित है। साम्प्रदायिकता का अर्थ आज गलत बताया जाने लगा है। इस कारण चारों ओर भेदभाव, नफरत और कटुता का जहर घुलता जा रहा है। साम्प्रदायिकता से प्रभावित व्यक्ति, समाज और राष्ट्र एक-दूसरे के प्रति असद्भावों के शिकार हो जाते हैं। जब धर्म राजनीति से जुड़ जाता है तो सम्प्रदाय का निर्माण होता है ठीक उसी तरह जैसे घोड़े और गधी के सम्पर्क से खच्चर का जन्म। धर्म तो परम सत्य है। वह राजनीति को निर्देश दे सकता है किन्तु राजनीति से मैत्री कदापि संभव नहीं है। और जब साम्प्रदायिकता मदान्धता को चुन लेती है तब वहाँ साम्प्रदायिकता उत्पाद उत्पन्न होता है और उत्पाद मनुष्य को पथभ्रष्ट कर देता है। हिंसा पथभ्रष्ट लोग ही करते हैं। पथ पर चलने वाले राह में कांटा नहीं फैलाया करते। उन्मादी व्यक्ति विवेकशून्य होकर धर्म के भ्रम में काल का रूप धारण करके मानवता को ही समाप्त करने पर तुल जाता है। फिर नैतिकता, शिष्टता, उदारता, सरलता, सहृदयता आदि सात्विक और दैवीय गुणों और प्रभावों को कहीं शरण नहीं मिलती है। सत्कर्तव्य जैसे निरीह बनकर किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं। परस्पर

सम्बन्ध कितने गलत और कितने नारकीय बन जाते हैं। इसकी कहीं कुछ न सीमा रह जाती है और न कोई अनुमान। बलात्कार, हरण-हत्या, अनाचार, दुराचार आदि पाशविक दुष्प्रवृत्तियाँ हुँकारने लगती हैं। परिणामस्वरूप मानवता का कहीं कोई चिन्ह नहीं रह जाता है।

आज विश्व में प्राय: सभी जातियों और धर्मों ने साम्प्रदायिकता का मार्ग अपना लिया है। हर जगह आतंकवाद बढ़ रहा है। इससे कहीं हिन्दू-मुसलमान में तो कहीं हिन्दुओं-सिक्खों में या मुसलमान-मुसलमान में या अन्य जातियों में दंगे-फसाद बढ़ते ही जा रहे हैं।

(ग) **इंटरनेट का बढ़ता दायरा**

आज संचार माध्यमों के दिन प्रतिदिन होते नए आविष्कार ने संसार की दूरी को एक सेकेंड और एक मिनट की दूरी में समेट दिया है। भौगोलिक सीमाओं में आबद्ध व्यक्ति सूचना प्रौद्योगिकी और संचार प्रौद्योगिकी में नित नए आविष्कार और अनुसंधान के चलते संचार की सुगम व्यवस्था की ओर बढ़ता जा रहा है। अब तो यह आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी अपने आधुनिक व्यवस्था के आलिंगन में समूचे विश्व को समेटती जा रही है।

प्रगति के पथ पर मानव बहुत दूर चला आया है। जीवन के हर क्षेत्र में कई ऐसे मुकाम प्राप्त कर लिये हैं जो हमें जीवन की सभी सुविधाएं, सभी आराम प्रदान कराने में सक्षम हैं। आज संसार माव की मुट्ठी में समाया हुआ है। जीवन के सभी क्षेत्रों में सबसे अधिक क्रान्तिकारी कदम सूचना और दूर संचार क्षेत्र में उठाए गये हैं। अनेक नए स्रोत, नए साधन और नई सुविधाएं प्राप्त कर ली गयी हैं जो हमें आधुनिकता के दौर में काफी ऊपर ले जाकर खड़ा करती हैं। ऐसे ही सूचना साधनों में आज एक बड़ा ही सहज नाम है इंटरनेट। वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी विकास के परिप्रेक्ष्य में विश्व का प्रत्येक प्राणी दूर-दराज के क्षेत्र में स्थित अपने सगे-सम्बन्धियों, व्यापार-सम्बन्धी व्यक्तियों से पारिवारिक, व्यावसायिक एवं बौद्धिक सम्पर्क स्थापित कर रहा है। कम्प्यूटर के माध्यम से इंटरनेट का आश्रय लेकर समस्त मानव जाति एक सूत्र में बँधन के लिए अग्रसर है। मानव जीवन की सभी गतिविधियाँ- राजनीतिक, व्यापारिक, सांस्कृतिक आदि इंटरनेट और दूसरी इलेक्ट्रॉनिक सुविधाओं से लाभान्वित हो रही हैं।

मोन्ट्रीयल के पीटर ड्यूस ने पहली बार 1989 में मैक्-गिल यूनिवर्सिटी में इंटरनेट इंडेक्स बनाने का प्रयत्न किया। इसके साथ ही थिंकिंग मशीन कॉर्पोरेशन के विडस्टर क्रहले ने एक-दूसरा इंडेक्सिंग सिस्टम वाइड एरिया इन्फोर्मेशन सर्वर विकसित किया। उसी दौरान यूरोपियन लेबोरेटरी फॉर पार्टिकल फिजिक्स के बर्नर्स ली ने इंटरनेट पर सूचना के वितरण के लिए एक नई तकनीक विकसित की जिसे वर्ल्ड-वाइड वेब के नाम से जाना गया। यह हाइपर टेक्स्ट पर आधारित होता है जो किसी इंटरनेट यूजर को इंटरनेट की विभिन्न साइट्स पर एक डॉक्यूमेंट को दूसरे से जोड़ता है। यह काम हाइपर-लिंग के माध्यम से होता है। हाइपर-लिंग विशेष रूप से प्रोग्राम किए गये शब्दों, बटन अथवा ग्राफिक्स को कहते हैं।

इलेक्ट्रॉनिक अनुसंधान में इलेक्ट्रॉनिक डाक- उपकरण एक अनूठी खोज है। यह दो तरह का होता है- इंटरनेट ई-डाक (ई-मेल) व गैर इंटरनेट डाक। इनके संचालन के लिए डाक कार्यक्रम का उपयोग किया जाता है। तेजी से व कम खर्च में डाक भेजने का साधन है- वर्तमान ई-डाक (ई-मेल) प्रणाली। इसके बाद महत्वपूर्ण हैं डाक सूचियाँ, सूची सेवाएं और बुलेटिन बिल बोर्ड। डाक सूचियां एक ही स्रोत वाली सूचनाएं आसानी से और कम खर्च में सुलभ कराती है। सूची सेवाएं एक स्वचालित सर्वर कार्यक्रम से संचालित होती हैं। ये सुविधाएं विशेष रुचि वाली होती हैं।

इंटरनेट का जन्म अमेरिका में शीत-युद्ध के दौरान हुआ था। इसकी शुरुआत सन् 1969 में एडवान्स्ड रिसर्च प्रोजेक्ट्स एजेंसीज द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका के चार विश्वविद्यालयों के कम्प्यूटरों की नेटवर्किंग करके की गई थी। इसका विकास मुख्य रूप से शिक्षा शोध एवं सरकारी संस्थाओं की सुविधा के लिए किया गया था। इसके पीछे मुख्य उद्देश्य था संचार माध्यमों को वैसी आपात स्थिति में भी बनाए रखना जब सारे माध्यम निष्फल हो जाएँ। सन् 1971 तक इस कम्पनी ने लगभग दो दर्जन कम्प्यूटरों को इस नेट से जोड़ दिया था। सन् 1972 में शुरुआत हुई ई-मेल अर्थात् इलेक्ट्रॉनिक मेल की जिसने सूचना संचार जगत में क्रान्ति ला दिया।

इंटरनेट प्रणाली में प्रॉटोकॉल एवं एक टी.पी. प्रोटोकॉल (फाइल ट्रांसफर प्रोटोकॉल) की सहायता से इंटरनेट यूजर (प्रयोगकर्ता) किसी भी कम्प्यूटर से जुड़कर प्रोटोकॉल के लिए डिजाइन किया गया। सन् 1983 में यह इंटरनेट पर एवं कम्प्यूटर के बीच संचार माध्यम बन गया। इलेक्ट्रॉनिक वाणिज्य अंकीय क्रान्ति की प्रमुख देन है जिससे बाजार से सम्बन्धित प्राय: सभी गतिविधियां संचालित होती हैं। किसी भी व्यवसाय के मुख्यत: तीन पहलू होते हैं- उत्पादों का विपणन, खरीद-बिक्री का लेखा-जोखा और उत्पाद या सेवा की प्रस्तुति। इंटरनेट से जुड़कर प्रयोक्ता व्यावसायिकता के तीनों पहलुओं का आंकिक सम्पर्क प्राप्त करता है। इंटरनेट की व्यापकता के कारण इलेक्ट्रॉनिक वाणिज्य का बाजार किसी भी भौगोलिक सीमा से मुक्त होकर परिवर्तित होता है। इलेक्ट्रॉनिक वाणिज्य मुख्यत: तीन प्रकार के होते हैं- बी टूबी. सी टू सी और सी टू बी। इसके अन्तर्गत व्यावसायिक और उपभोक्ता बाजार से सम्बन्धित सारी प्रक्रियायें कम्प्यूटर पर पूरी होती हैं।

धीरे-धीरे इंटरनेट के क्षेत्र में कई विकास हुए। सन् 1994 में नेटस्केप कम्यूनिकेशनल और 1995 में माइक्रोसॉफ्ट के ब्राउजर बाजार में उपलब्ध हो गए जिससे इंटरनेट का प्रयोग काफी आसान हो गया। सन् 1996 तक इंटरनेट की लोकप्रियता काफी बढ़ गई। लगभग 4.5 करोड़ लोगों ने इंटरनेट का प्रयोग शुरु कर दिया। इनमें सर्वाधिक संख्या अमेरिका (3 करोड़) की थी, यूरोप से 90 लाख और 60 लाख एशिया एवं प्रशांत क्षेत्रों में थे।

ई-कॉम की अवधारणा काफी तेजी से फैलती गयी। संचार माध्यम के नए-नए रास्ते खुलते गए। नई-नई शब्दावलियाँ जैसे ई-मेल, वेबसाइट (डॉट-कॉम), वायरस, आदि इसके अध्यायों में जुड़ते रहे। वर्ष 2000 में इंटरनेट का विस्तार इतना बढ़ गया कि इसमें कई तरह की समस्याएं भी उठने लगीं। कई नए वायरस समय-समय पर दुनिया के लाखों कम्प्यूटरों को प्रभावित करते रहे। इन समस्याओं से जूझते हुए संचार का क्षेत्र आगे बढ़ता रहा। भारत भी अपनी भागीदारी इन उपलब्धियों में जोड़ता रहा। आज भारत में इंटरनेट कनेक्शनों और प्रयोगकर्ताओं की संख्या लाखों में है।

प्रश्न.4. मेधा-सह-निर्धनता छात्रवृत्ति के लिए अपने विद्यालय के प्राचार्य के नाम आवेदन-पत्र लिखें।

उत्तर. सेवा में
प्राचार्य,
संत जॉन्स हाई स्कूल,
हजारीबाग।

विषय : मेधा सह छात्रवृत्ति के लिए आवेदन पत्र।

महोदय,

मेरा नाम रंजीत कुल्लु है। मैं आपके ही विद्यालय में वर्ग- XII 'ब' का छात्र हूँ। मेरे पिताजी एक गरीब किसान हैं। इस वर्ष मेरे गाँव में अकाल पड़ने के कारण फसल नष्ट हो गई। इसके कारण आमदनी का स्तर काफी गिर गया और घर में आर्थिक तंगी की स्थिति हो गई। मेरे लिए विद्यालय शुल्क देना संभव नहीं है।

अतः आपसे नम्र निवेदन है कि मुझे मेधा सह छात्रवृत्ति देने की कृपा करें ताकि मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सकूँ।

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी छात्र
रंजीत कुल्लु
XII 'ब'
55

दिनांक- 25/04/2017

अथवा

प्रश्न. **अपने नगर में नियमित जलापूर्ति के लिए जल-आपूर्ति निकाय के अध्यक्ष के नाम एक प्रार्थना-पत्र लिखें।**

उत्तर. सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी,
नगरपालिका, हजारीबाग,
विषय-पेयजल की अनियमित आपूर्ति।
महोदय,

आज पूरा नगर पेयजल की अनियमित आपूर्ति से परेशान है। अधिकतर चापाकल मरम्मत के इन्तजार में बेकार पड़े हैं। नलों में पाँच-पाँच दिनों तक पानी नहीं छोड़ा जाता। पानी आता भी है तो आधे-एक घण्टे के लिए। लोग आधी रात से ही बरतन-बाल्टी लिये लाइनों में खड़े रहते हैं। पानी के लिए आपस में मारपीट भी हो जाती है।

आपसे सविनय आग्रह है कि इस समस्या से निजात दिलाने के लिए त्वरित एवं प्रभावी कार्यवाही करें। लाखों लोगों का जीवन इस समस्या के कारण बिल्कुल अव्यवस्थित हो गया है।

दिनांक : 10.03.2017

भवदीय
जगत राम
रामनगर, हजारीबाग

प्रश्न.5. जनसंचार के विभिन्न माध्यमों का परिचय दें।

उत्तर. जनसंचार के प्रमुख माध्यम हैं- मुद्रित माध्यम, श्रव्य माध्यम एवं दृष्य माध्यम।

समाचारपत्र एवं पत्र-पत्रिकाएँ मुद्रित माध्यम हैं। रेडियो श्रव्य माध्यम है। टी.वी. एवं सिनेमा में दृष्य माध्यम एवं श्रव्य माध्यम दोनों का प्रयोग होता है। इंटरनेट में मुद्रित, श्रव्य एवं दृष्य तीनों माध्यमों का उपयोग होता है।

अथवा

प्रश्न. **एक अच्छे सम्पादक की विशेषताओं का उल्लेख करें।**

उत्तर. एक अच्छे सम्पादक में निम्नलिखित गुण होने चाहिए-

(i) संपादकीय लेख की शैली प्रभावशाली एवं सजीव होनी चाहिए।
(ii) भाषा बिल्कुल स्पष्ट, सशक्त और प्रखर होनी चाहिए।
(iii) बात में अगर चुटीपालन भी हो तो लेख आकर्षक बन जाता है।
(iv) संपादक की हर बात बेबाक और सुस्पष्ट होनी चाहिए।
(v) दुलमुल शैली, हर बात को सही ठहराया और अंत में कुछ न कहना- ये संपादकीय दोष हैं। इनसे बचना चाहिए।

प्रश्न.6. 'धार्मिक सहिष्णुता की आवश्यकता' पर एक आलेख प्रस्तुत करें।

उत्तर. पिछले दिनों डॉ. महीप सिंह जमाअत इसलामी हिंद द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। अवसर था 'हजरत मोहम्मद : जीवन और संदेश' नामक हिंदी पुस्तिका तथा कुरआन सीडी (उर्दू अनुवाद) का लोकार्पण। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्था के उपाध्यक्ष मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी ने की थी। लेखक ने जमाअत इसलामी हिंद को इस बात के लिए बधाई दी कि उसने हजरत मोहम्मद से संबंधित ऐसे आयोजन में कुछ और मुसलमानों को भी आमंत्रित कर संवाद को महत्व दिया। दूसरी बात, जिस पर उन्होंने आग्रह किया कि संसार में वह दिन कभी नहीं आएगा जब सभी लोग एक धर्म, एक धर्मग्रंथ और एक प्रवर्तक या पैगंबर के अनुयायी हो जाएँगे। इस संसार में सदा ही विविधताएँ रही हैं और भविष्य में भी रहेंगी। इस प्रकार की विविधताओं और उनके कारण उत्पन्न मतभेदों, विग्रहों के कारण विभिन्न धर्मों के मानने वाले लोग आपस में खूनी जंग लड़ते रहे हैं और एक-दूसरे का संहार करते रहे हैं। सभी धर्म शांति और भाईचारे का उपदेश देते हैं, किंतु मानव-इतिहास इस बात का साक्षी है कि विभिन्न धर्मों की आपसी लड़ाइयों में आज तक जितने लोग मारे गए हैं उतने राजनीतिक प्रभुता की प्राप्ति के लिए लड़े गए युद्धों, प्राकृतिक आपदाओं या दुर्भिक्षों के कारण नहीं मारे गए।

इन अनुभवों के आधार पर चिंतनशील लोग इस निर्णय पर पहुँचे हैं कि सभी प्रकार की धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक या आर्थिक विभिन्नता और विषमता रहते हुए भी मनुष्य सहअस्तित्व के मंत्र के आधार पर जिएगा और आपस में सहयोग करते हुए आगे बढ़ेगा। वहाँ एक बात उन्होंने और कही कि आज इसलाम और मुसलिम समुदाय आतंकवाद का पर्याय बन गए हैं। आतंकवाद शत्रु से युद्ध नहीं करता। आतंकवादी वही बनता है जो अपने शत्रु से सीधे-सीधे युद्ध करने की क्षमता नहीं रखता। इसलामी विद्वानों का दावा है कि इसलाम पूरी तरह शांति और सभी की भलाई का धर्म है। वह बेगुनाओं की हत्या को अक्षम्य मानता है और किसी भी स्तर पर भेदभाव नहीं करता। कुरआन मजीद की जो प्रति इसलामी विद्वानों ने लेखक को दी थी, उसके प्रारंभिक पृष्ठों में हजरत मोहम्मद की संक्षिप्त जीवनी दी गई है। उसके अंतिम पृष्ठों में लिखा है कि हजरत मोहम्मद ने आखिरी हज किया और उसमें एक तकरीर की। उसमें उन्होंने कहा- "खुदा एक है और तमाम इन्सान आदम की औलाद हैं और वे सब बराबर हैं। अरबी को अजमी (गैर-अरबी) पर और अजमी को अरबी पर, काले को गोरे पर और गोरे को काले पर कोई फजीलत (श्रेष्ठता) नहीं। अगर किसी की बड़ाई है तो नेक (पुण्य) काम की वजह से है।" इन शब्दों से यह स्पष्ट है कि पैगंबर की दृष्टि में अरबी, गैर-अरबी और काले-गोरे की श्रेष्ठता उसके नेक कामों से बनती है। इस कथन का यदि विस्तार किया जाए तो मुसलमान और गैर-मुसलमान में श्रेष्ठता की कसौटी उसका धर्म नहीं है, बल्कि उसके नेक काम हैं।

डॉ. अब्दुल मुघनी की लिखी पुस्तक है- 'इस्लाम और आतंकवाद'। इस पुस्तक में कुरआन की अनेक आयतों का उदाहरण देते हुए यह सिद्ध किया गया था कि इस्लाम किसी भी रूप में आतंकवाद का समर्थन नहीं करता। एक आयत में कहा गया है कि अल्लाह ने हजरत मोहम्मद को सभी इन्सानों के लिए वरदान बना कर भेजा। वे सभी लोगों के उद्धारक हैं, भले ही उनका दर्जा, मजहब और जाति कुछ भी क्यों न हो। इसलाम के साथ जेहाद शब्द को जोड़कर देखा जाता है और सामान्यतः उससे यही अर्थ लिया जाता है कि इस्लाम में अपने विरोधियों के साथ सदैव युद्धरत रहने को जेहाद कहते हैं।

अनेक उग्रवादी इसलामी संगठन अपने आप को जेहादी संगठन कहते हैं, किन्तु नसीम गाजी ने अपनी पुस्तक 'कुरआन पर अनुचित आक्षेप' में लिखा है कि जेहाद का अर्थ या लड़ाई नहीं है, बल्कि इसका अर्थ जद्दोजहद करना, संघर्ष करना, जी तोड़ कोशिश करना, दबाव डालना, कठिनाइयाँ और कष्ट उठाना है। कुरआन मजीद में एक स्थान पर कहा गया है- "ऐ पैगंबर सत्य का इनकार करने वालों का अनुसरण कदापि न करो और इस कुरआन को लेकर उनके साथ जबरदस्त जेहाद (प्रत्यय) करो।" लेखक का मत है कि कुरआन की इस आयत में जेहाद से अभिप्राय युद्ध और लड़ाई नहीं, बल्कि जी तोड़ कोशिश करना है। हदीस के अनुसार हजरत मोहम्मद का कथन है कि सबसे बड़ा जेहाद

अपने मन पर नियंत्रण पाना है। लेकिन यह भी मानते हैं कि कुरआन में जेहाद शब्द अनेक स्थानों पर युद्ध के लिए भी आया है। संकट यही है कि धर्मग्रंथों की जब लोग अपने अपने ढंग से व्याख्या करते हैं तो वही अर्थ निकालते हैं जो उनकी सोच के अनुरूप होता है।

किसी भी धर्म या मजहब के अनुयायियों को यह अधिकार है कि वे उसका प्रचार प्रसार करने का प्रयास करें और उसकी अच्छाइयों को लोगों के सामने लाएँ।

इस प्रयास के दो पक्ष हैं। पहला यह कि इस प्रचार के माध्यम से वे उन लोगों को अपने विश्वास या मजहब में लाएँ जो उससे बाहर हैं। दूसरा पक्ष यह है कि वे अपने धर्म या मजहब के उपदेशों और मान्यताओं को सही ढंग से उन लोगों के सम्मुख रखें जो उसके अनुयायी नहीं हैं। ऐसा अंतर-धार्मिक संवाद भ्रांतियों को दूर करने में सहायक होता है।

अथवा

प्रश्न. 'जातिवादी राजनीति' के फैलाव पर एक सम्पादकीय लिखें।

प्रश्न.7. सप्रसंग व्याख्या करें:

साधु सभाँ गुरु प्रभु निकट कहउँ सुथल सति भाउ।
प्रेम प्रपंचु कि झूठ फुर जानहिं मुनि रघुराउ॥

उत्तर. **प्रसंग-** प्रस्तुत काव्यांश **'भरत-राम का प्रेम'** से अवतरित है। यह काव्यांश तुलसीकृत **'रामचरित मानस'** के **'अयोध्याकांड'** के राम वनगमन-प्रसंग से संकलित है। भरत राम को अयोध्या लौटा ले जाने के लिए वन पहुँच चुके हैं। चित्रकूट की सभा में मुनि वशिष्ठ के निर्देश से वे अपनी बात कहने के लिए खड़े होते हैं।

व्याख्या- भरत कहते हैं- राम का मुझ पर अनन्य स्नेह रहा। लेकिन विधि को उनका मुझ पर यह दुलार लुटाना सह्य नहीं हुआ। मैं अपने हृदय में अपने भले का मार्ग ढूंढता रहा लेकिन मुझे कोई मार्ग नहीं सूझा। मेरे भले की डोर मेरे सर्व समर्थ गुरु और मेरे स्वामी सीताराम के हाथ में है। इसी से मुझे सुपरिणाम की आशा नजर आती है। मैं यह बात छल-प्रपंच रचकर नहीं अपितु पवित्र हृदय से इस पवित्र स्थान पर कह रहा हूँ यह बात वशिष्ट और सियाराम जी भली-भाँति जानते हैं।

विशेष- इस काव्यांश में भरत के हृदय की असीम ग्लानि व्यक्त हुई है। भरत को दुःख है कि उन्होंने बिना विचारे माता के हृदय को कटु वचन कहकर दग्ध किया जबकि सभी अनर्थ के मूल वे स्वयं हैं।

अथवा

जो है यह खड़ा है
बिना किसी स्तंभ के
जो नहीं है उसे थामे है
राख और रोशनी के ऊँचे ऊँचे स्तंभ।

उत्तर. **सप्रसंग व्याख्या- प्रसंग-** प्रस्तुतकाव्यावतरण केदारनाथ सिंह की कविता **'बनरास'** की पंक्तियाँ हैं। कवि ने इस अवतरण में बनारस की विचित्र विशेषताएँ पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या- इस अवतरण के पूर्व के अवतरण में कवि ने बनारस के चेहरे की पूर्णता उजागर करने की कोशिश की है किन्तु, उसके चेहरे के पहलू को देख और दिखा सका है। इस अंश में कवि कहता है कि यह शहर बिना किसी अवलम्ब के खड़ा है, लेकिन जो अदृश्य है उसके चिताओं की राख के ऊँचे ढेर (स्तम्भ) तथा आरती की रोशनियाँ की ऊँची-ऊँची उठती लौ थामे हुए हैं।

प्रश्न.8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें।

(क) देवसेना की हार या निराशा के कारणों पर विचार करें।

उत्तर. देवसेना मालवा के राजा बंधुवर्मा की बहन थी। हूणों के आक्रमण में बंधुवर्मा की सपरिवार वीरगति हुई। देवसेना स्कंदगुप्त को चाहती थी, किंतु वह विजय का स्वप्न देखता था। जीवन के अंतिम मोड़ पर स्कंदगुप्त देवसेना को पाना चाहता है किंतु वह वृद्ध पर्णदत्त के साथ आश्रम में गाना गाकर भीख माँगती है। स्कंदगुप्त उससे अनुनय-विनय करता है परंतु वह नहीं मानती तो स्कंदगुप्त भी आजीवन कुँवारा रहने का व्रत ले लेता है। देवसेना अपने मन को समझाती हुई कहती है-'हृदय की कोमल कल्पना सो जा। जीवन में जिसकी संभावना नहीं, जिसे द्वार पर आए हुए लौटा दिया था उसके लिए पुकार मचाना क्या तेरे लिए अच्छी बात है। आज जीवन के भावी सुख, आशा और आकांक्षा-सबसे मैं विदा लेती हूँ।" देवसेना अपने यौवन के कार्यकलापों के लिए अफसोस करती है। जीवन के अनुभवों में प्राप्त वेदनामय क्षणों को याद कर उसकी आँखों से आंसू की धारा निकल रही है। यौवन की भूल से उत्पन्न वेदना ही उसकी हार या निराशा का कारण है। जिस यौवन को सबकी दीठ से बचाकर रखती थी उसे भ्रमवश मृगतृष्णा में पड़कर लुटा चुकी देवसेना जीवन के अंतिम मोड़ पर निराशा के गर्त में गिरी है और जीवन को छोड़कर मुक्त हो जाना चाहती है।

(ख) पठित पाठ के आधार पर बतलायें कि भरत का आत्म-परिताप उनके चरित्र के किस पक्ष को उजागर करता है।

उत्तर. भरत राम के प्रति सम्मान और आंतरिक लगाव-जुड़ाव के प्रेम के भाव से पूरित हैं। वे राम के लिए सब कुछ त्याग सकते हैं। राजसिंहासन भरत के लिए बड़े भाई के प्रेम के समक्ष अर्थहीन है। माता कैकेयी द्वारा भरत को स्वार्थ-पथ पर लाने की तमाम कोशिशें भरत की अच्छाई, सच्चाई, बड़े भाई के प्रति आदर और प्रेम के साथ त्याग के परिणामस्वरूप असफल हो गयी।

(ग) पठित कविता के संदर्भ में स्पष्ट करें कि सत्य की पहचान कैसे होती है।

उत्तर. सत्य की पहचान आसान नहीं है। इसलिए सत्य की महत्ता सदैव से रही है। जिस समय और समाज में कवि रह रहा है, उसमें सत्य की पहचान और उसकी पकड़ कितनी मुश्किल होती जा रही है- यह कविता उसका प्रमाण है। कवि विष्णु खरे ने युधिष्ठिर तथा विदुर को सत्य तथा संकल्प का प्रतीक बताया है और सत्य की पहचान को कविता का विषय बनाया गया है सत्य कभी दीखता है, तो कभी ओझल हो जाता है। कवि के अनुसार संकल्प के द्वारा ही सत्य की पहचान की जा सकती है। यदि हमारे पास युधिष्ठिर के जैसा संकल्प हो तो हम सत्य के सही स्वरूप को पहचान सकते हैं।

(घ) स्पष्ट करें कि देवी सरस्वती की उदारता का गुणगान क्यों नहीं किया जा सकता।

उत्तर. देवी सरस्वती की उदारता का गुणगान इसलिए असंभव है क्योंकि वे अपार गुणों की खान हैं। निरन्तर उनकी उदारता का नया-नया पक्ष (रूप) उजागर होता रहता है। इसी कारण ज्ञानी से ज्ञानी सिद्ध पुरुष, तपोवृद्ध और ऋषिराज उसकी उदारता की थाह नहीं पा सके। ये तो खैर मनुष्य ही ठहरे, स्वयं उनके चतुर्मुख पति ब्रह्मा, त्रिकालदर्शी पुत्र पंचमुख शिव और षडमुख पौत्र कार्तिकेय जैसे निकट सम्बन्धी भी उनकी उदारता को सम्पूर्णता में नहीं जान पाये।

प्रश्न.9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो का काव्य-सौन्दर्य बतलायें:

(क) कहि कहि छबीले मनभावन को,
गहि गहि राखति ही दै दै सनमान को।

(ख) तोहर बिरह दिन छन-छन तनु छिन-
चौदसि-चाँद-समान

(ग) आह! वेदना मिली विदाई !
मैंने भ्रम-वश जीवन संचित,
मधुकरियों की भीख लुटाई।

उत्तर. 1. तत्सम प्रधान खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।
2. 'आँसू-से' में उपमा अलंकार का सुंदर प्रयोग दर्शनीय है।

3. 'संध्या के श्रमकण' तथा 'लेती थी नीरवता अनंत अंगड़ाई' में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किया गया है।
4. भाषा में ओज और माधुर्य का संगम हुआ है।
5. गीत के शिल्प में रची गई इस कविता में कवि ने वेदना के क्षणों में मानव-प्रकृति के संबंधों को व्यक्त किया है।

(घ) एक बूँद सहसा उछली सागर के झाग से;
रंग गई क्षणभर ढलते सूरज की आग से।

उत्तर. इन पंक्तियों में कवि ने जीवन की क्षणभंगुरता की महत्ता को भावपूर्ण शब्दों में दर्शाया है। भाषा में सरलता, सजीवता एवं प्रवाहमयता है। शब्दों का चयन अत्यंत सटीक एवं प्रभावपूर्ण है। 'बूँद' और 'सागर' का प्रतीकात्मक प्रयोग हुआ है। लाक्षणिक प्रयोग दर्शनीय है।

प्रश्न.10. सप्रसंग व्याख्या करें:

कभी-कभी जो लोग ऊपर से बेहया दिखते हैं, उनकी जड़ें काफी गहरी पैठी रहती हैं। ये भी पाषाण की छाती फाड़कर न जाने किस अतल गह्वर से अपना भोग्य खींच लाते हैं।

उत्तर. **प्रसंग**-प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक **'अंतरा भाग-2'** में संकलित पाठ **'कुटज'** से लिया गया है। इसके लेखक **'हजारी प्रसाद द्विवेदी'** हैं। इन पंक्तियों में लेखक ने कुटज के साहस का वर्णन किया है।

व्याख्या-लेखक नन्हे पौधे कुटज की साहसिक प्रवृत्ति की प्रशंसा करते हुए कहता है कि कुटज ऊपर से छोटा व कोमल दिखता है किंतु भीतर से वह इतना दृढ़ है कि उसने कठोर पत्थर को भी फाड़कर, अपना अस्तित्व कायम कर लिया है।

अथवा

हरगोबिन ने देखी है अपनी आँखों से द्रौपदी चीर-हरण लीला। बनारसी साड़ी को तीन टुकड़े करके बँटवारा किया था, निर्दय भाइयों ने।

प्रश्न.11. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें:

(क) बालक द्वारा इनाम में लड्डू माँगने पर लेखक ने सुख की साँस क्यों भरी?

उत्तर. इच्छित इनाम के रूप में जब बालक ने लड्डू माँगे तो उसने अपने बालक होने का सहज प्रमाण दिया। इसी से लेखक में यह आशा जगी कि भविष्य में अपना स्वाभाविक विकास करते हुए हरियाने वाले वृक्ष की तरह इस बालक की स्वाभाविक प्रतिभा भी प्रस्फुटित हो सकेगी। वह कृत्रिमता की कड़ी परत को तोड़ पाने में सक्षम बन सकेगा।

(ख) लेखक बुढ़िया से बोधिसत्व की आठ फुट लंबी सुन्दर मूर्ति प्राप्त करने में कैसे सफल हुआ?

उत्तर. बुढ़िया यह मूर्ति मुफ्त में देने के लिए तैयार नहीं थी। यह मूर्ति उसी के खेत में निकली थी। बुढ़िया से बोधिसत्व की आठ फुट लंबी सुंदर मूर्ति प्राप्त करने के लिए लेखक ने सोचा कि दूसरे की मुद्रा की झनझनाहट गरीब आदमी के हृदय में उत्तेजना पैदा करती है। उसी का आश्रय लेकर दो रुपये का प्रलोभन देकर लेखक ने उससे यह सुन्दर मूर्ति प्राप्त कर ली।

(ग) रोगी बालक के प्रति गांधी जी के व्यवहार को वर्णित करें।

उत्तर. रोगी बालक के प्रति गांधी जी का व्यवहार अत्यन्त आत्मीय, सहानुभूतिपूर्ण, ममता से भरा और मृदुलतापूर्ण था।

(घ) लेखक के अनुसार कुटज के जीवन से हमें क्या सीख मिलती है?

उत्तर. कुटज निर्भीकता, स्वाभिमान, मन और हृदय की दृढ़ता, सुख-दुःख, प्रिय और अप्रिय सबको समभाव से स्वीकार करने की सीख देता है। वह चाटुकारिता से, अंधविश्वास, ग्रह-नक्षत्रों की चाल की भयभीत मनोदशा से दूर रहकर, 'हृदयेनापराजितः' बनकर जीने की कला सीखता है। वह अपराजित स्वभाव और अविचलित जीवन-दृष्टि प्रदान करता है।

प्रश्न.12. कवि विद्यापति अथवा कथाकार फणीश्वर नाथ रेणु का साहित्यिक परिचय लिखें।

उत्तर.

विद्यापति

प्राचीन दरभंगा जिले के विसपी ग्राम में विद्यापति का जन्म 1380 ई के आसपास हुआ था। उनके पिता श्रीगणपति ठाकुर मिथिला के तत्कालीन राजदरबार के अत्यंत सम्मानित पंडित थे। विद्यापति का भी उक्त दरबार में ससम्मान प्रवेश हुआ। कीर्तिसिंह के दरबार में तो उन्हें प्रतिष्ठा मिली ही महाराज शिवसिंह एवं उनकी धर्मपत्नी लखिमा देवी के भी वे कृपापात्र थे, जिनकी प्रशंसा उन्होंने अपने अनेक पदों में की है।

विद्यापति की प्रमुख रचनाएँ हैं- 'कीर्तिलता', 'कीर्तिपताका', 'भू-परिक्रमा', 'पुरुष-परीक्षा', 'लिखनावली', 'शैवसिद्धान्तसार', 'गंगावाक्यावली', 'विभासागर', 'दानवाक्यावली', 'दुर्गाभक्ति-तरंगिणी' इत्यादि। 'कीर्तिलता' में तिरहुत के राजा कीर्तिसिंह की वीरता, उदारता, गुण-ग्राहकता आदि का वर्णन किया गया है। डॉ. शिवप्रसाद सिंह ने 'कीर्तिलता' के संबंध में लिखा है, "इस रचना से कवि विद्यापति की प्रबंध-प्रतिभा का पता चलता है। यद्यपि यह काव्य मध्यकालीन ऐतिहासिक कथाकाव्यों की शैली में लिखा गया है, किन्तु कवि ने परिपाटी के प्रतिकूल इसमें अपने संरक्षक नरेश की अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा प्रायः नहीं की है। मध्यकालीन कथाकाव्य प्रायः पद्य में लिखे गये हैं। 'कीर्तिलता' प्रचलित चरितकाव्यों किंचित् भिन्न शैली में लिखी गई है। इसमें अलंकृत पद्य भी है।" इसमें सज्जन-प्रशंसा, दुर्जन-निंदा, नगर-वर्णन, युद्ध-वर्णन जैसे मध्यकालीन कथाकाव्यों की रूढ़ियाँ भी हैं, किन्तु अत्यंत भव्य हैं। 'कीर्तिपताका' भी प्रशस्तिमूलक काव्य हैं, किन्तु इसमें महाराज कीर्तिसिंह के वंशज शिवसिंह महाराज की प्रशंसा है। 'भू-परिक्रमा' राजा शिवसिंह की आज्ञा से लिखित भूगोल-संबंधी पुस्तक है। 'पुरुष-परीक्षा' में कवि ने दण्डनीति का निरूपण किया है। 'लिखनावली' में चिट्ठी-पत्री लिखने का निदर्शन है। 'शैवसिद्धान्तसार' में दान-संबंधी शास्त्र, 'विभागसार' में संपत्ति के बंटवारे की विविध समस्याओं के समाधान एवं 'दुर्गाभक्तितरंगिणी' में दुर्गा की भावपूर्ण भक्ति से संबंधित पद हैं। इनके अतिरिक्त, 'मंजरी' नामक एक नाटक की भी रचना उन्होंने की है।

फणीश्वरनाथ 'रेणु'

प्रेमचंद के बाद हिन्दी के सबसे चर्चित कथाशिल्पी हैं। हिन्दी कथा-साहित्य में आंचलिकता के अग्रणी कथाकार के रूप में ख्याति पाने वाले कथाकार फणीश्वरनाथ 'रेणु' का जन्म 4 मार्च, 1921 को हुआ था। पूर्णिया जिला के सेमराहा रेलवे स्टेशन के पास औराही हिंगना नामक गाँव में एक मध्यमवर्गीय किसान-परिवार में वे जन्मे थे।

'रेणुजी' का साहित्यिक परिचय एक आंचलिक कथाकार-उपन्यासकार के रूप में सर्वाधिक प्रतिष्ठित हुआ। आंचलिकता उनके कथा-साहित्य का प्राण-तत्त्व है। उनकी कहानियों में भी पूर्णिया जिले की आंचलिकता खूबियों-खामियों का जैसा जीवंत चित्रण दिखाई पड़ता है। वैसा अन्यत्र दुर्लभ ही है। 1954 में प्रकाशित उनके उपन्यास 'मैला आँचल' से उपन्यास के क्षेत्र में आंचलिक उपन्यास की परम्परा का प्रवर्तन हुआ और वह प्रथम आँचलिक उपन्यासकार के रूप में प्रतिष्ठित हुए। उनकी रचनाओं में मैला आँचल, परती परिकथा, दीर्घतपा, कलंकमुक्ति, जुलूस, पलटूबाबू रोड (उपन्यास) ठुमरी, अग्निखोट, आदिम रात्रि की महक, एक श्रावणी दोपहर की धूप, अच्छे आदमी (कहानी-संग्रह) ऋण जल-धनजल, वन तुलसी की गंध, श्रुतअश्रुतपूर्व (संस्मरण), नेपाली क्रांति कथा (रिपोर्ताज) आदि प्रमुख हैं।

'रेणुजी' की कहानियों में उनके उपन्यासों की भाँति ही नाटकीयता का संयोग उनकी एक अन्यतम विशेषता है। अपनी इस शैलीगत विशिष्टता के सहारे वे विविध क्षणजीवी बिम्बों के सृजन में सफल होते हैं।

'रेणुजी' का जीवन एक सतत तथा सक्रिय क्रांतिकारी जीवन रहा है पर

उनकी कहानियों में राजनीतिक विषयों का प्रायः अभाव दिखाई पड़ता है। परन्तु अपने व्यावहारिक जीवन राजनीतिक चेतना से अपने उपन्यासों को वे नहीं बचा सके हैं। गहरी मानवीय कहानियाँ प्रायः संवेदना से आरंभ होकर संवेदना के रूमानी या संघर्षहीन लोक में ही समाप्त हो जाती है। 'नई कहानी' के आन्दोलन को उन्होंने अपने कहानी-कौशल से प्रभावित किया था। जो हो, पर इतना तो सत्य है कि प्रेमचंद के बाद 'रेणुजी' ने हिन्दी कहानी को एक विशिष्ट और नई संवेदनात्मक वर्णन शैली तथा लोकचेतना की समृद्ध भावभूमि प्रदान की है। उनकी अनेक कहानियाँ हिन्दी कथा-साहित्य को उनकी अमर देन हैं। गद्य में व्यन्यात्मकता का सहारा लेकर यथार्थ जीवन-चित्र उतारने और उन्हें एक विशाल पाठक वर्ग तक सम्प्रेष्य बनाने में उन्होंने अद्‌भुत सफलता प्राप्त की है। ग्रामीण जीवन-चित्र उतारने और उन्हें एक विशाल पाठक वर्ग तक सम्प्रेष्य बनाने में उन्होंने अद्‌भुत कार्य किया। ग्रामीण जीवन की सूचनाएँ देने एवं तत्संबंधी जानकारियों का उपयोग करने में, अनेक वरिष्ठ हिन्दी समीक्षकों की राय में, वे हिन्दी के अमर ग्राम्य-जीवन-कथाकार प्रेमचंद से कहीं आगे गए हैं।

हाँ, एक आरोप भी किया जाता रहा है। वह यह कि भारत माता के आंचल को यथार्थ रूप में गंदला दिखाने के लिए वे जितने सक्षम चित्रण एवं सांकेतिक ही सही, किन्तु गालीवाली भाषा के प्रयोग तक उतरे हैं, उतना अपेक्षित नहीं था।

प्रश्न.13. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखे:

(क) मालवा में जैसी बरसात पहले होती थी, अब नहीं होती- इसके कारणों को स्पष्ट करें।

उत्तर. अब मालवा में वैसा पानी नहीं गिरा करता। इसका प्रमुख कारण प्रकृति से अति छेड़छाड़ है। जंगल उजाड़ दिये गये। नदियों पर बाँध बाँध दिये गये। आधुनिक औद्योगिक सभ्यता ने पर्यावरण को भयानक रूप से प्रदूषित कर डाला। वायुमंडल में कार्बन डाइ ऑक्साइड गैस का जमाव बढ़ गया। ग्लोबल वार्मिंग बढ़ने लगा। समुद्र की सतह उठने लगी। वर्षा के जितने अच्छे कारक थे या तो उन्हें नष्ट कर दिया गया या फिर प्रदूषण के कारण वे स्वतः अवरुद्ध हो गये। यही कारण है कि मालवा में अब पहले जैसी वर्षा नहीं होती।

(ख) सूरदास के प्रति जगधर के मन में ईर्ष्या-भाव किस तरह और क्यों जगा?

उत्तर. जगधर आरम्भ से ही अंधे सूरदास को सुख और संतोष के साथ रहते देखकर उससे जला करता था। उसकी ईर्ष्या की आग में घी तब और पड़ गया जब उसने बातों ही बातों में भैरों से यह जान लिया था कि वह सूरदास के पाँच सौ रुपयों की पोटली उड़ा ले आया था। इस जानकारी से उसके कलेजे पर साँप लोटने लगा था कि भैरों अब चैन की वंशी बजायेगा। दो-तीन दुकानें और ठेके पर ले लेगा। दूसरी ओर वह कितना अभागा है कि दिन-रात खटता है, खोमचा लगाता है और ग्राहकों से बेईमानी भी करता है फिर भी दो पैसे कमा नहीं पाता। उसकी जिन्दगी अभावों में ही गुजर रही है। यही कारण है कि सोच-सोचकर वह ईर्ष्या की आग में दहकने लगा था।

(ग) पठित पाठ में लेखक ने गरमी और लू से बचने के क्या उपाय बतलाये हैं?

उत्तर. अति प्राचीन समय से ही गरमी और लू से बचने के दो उपाय भारतवर्ष में प्रचलित रहे। एक तो अपनी जेब में रखकर या किसी कपड़े में बाँधकर उजला प्याज शरीर में बाँध लेने से लू और गरमी से बचाव हो जाता है। आम का पन्ना पीने और उसका लेप समूचे शरीर में लगाने से लू लगने के कष्टों से मुक्ति मिलती है। ये उपाय युग-युग से परीक्षित उपाय हैं और निश्चित रूप से इनसे लू और गरमी से बचाव होता है।

(घ) पर्यतारोहण की शिक्षा पाया हुआ रूप सिंह अपने भाई भूप सिंह के समक्ष पहाड़ चढ़ने में फिसड्डी क्यों है?

उत्तर. रूप सिंह ने पहाड़ पर चढ़ना पर्वतारोहण के आधुनिक उपकरणों के सहारे सीखा था लेकिन भूप सिंह तो सिर्फ पेड़-पत्थरों आदि प्राकृतिक साधनों के नाममात्र के सहारे, खड़ी से खड़ी चढ़ाई चढ़ने की स्वाभाविक कला साध चुके थे। यह काम केवल पहाड़ों में बसने वाला एक पहाड़ी ही कर सकता था। भूप सिंह ने रूप सिंह और शेखर कपूर को जब खड़ी चढ़ाई चढ़ने में असमर्थ देखा तो उसने मफलर को अपनी कमर से बाँधकर उसके दोनों छोरों को उन दोनों को दे दिया।

प्रश्न.14. विकास की औद्योगिक सभ्यता 'उजाड़ की अपसभ्यता है'- स्पष्ट करें।

उत्तर. लेखक का यह कथन अक्षरशः सत्य है कि औद्योगिक सभ्यता उजाड़ की अपसभ्यता है क्योंकि उद्योगों के विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध विदोहन और शोषण हुआ। हरे-भरे जंगल उजाड़ दिये गये। नदियों को बाँधकर उसकी मूल प्रकृति से खिलवाड़ किया गया। विशाल जनक्षेत्र डूबने लगे। जमीन क्षारीय हो गया।

कृषि योग्य भूमि और जंगलों को उजाड़ कर उस पर कल-कारखाने और बड़े-बड़े भवन आदि बना दिये गये। प्राकृतिक संसाधनों का शोषण तो हुआ लेकिन उनकी भरपाई का उचित प्रबंध नहीं किया गया। फलतः आज की औद्योगिक सभ्यता उजाड़ की अपसभ्यता मात्र में बदल कर रह गयी है।

अथवा

प्रश्न. पठित कहानी के आधार पर भूप दादा की चारित्रिक विशेषताएँ बतलायें।

उत्तर. भूप सिंह एक पहाड़ी थे। पहाड़ों पर चढ़ना उनके दैनिक जीवन का एक अनिवार्य अंग था। पर्वतारोहण की उनकी कला बिल्कुल जन्मजात, स्वाभाविक और नैसर्गिक थी। वे पहाड़ों पर नाममात्र के प्राकृतिक साधनों, जैसे पेड़ों और पत्थरों के सहारे अपने असीम धैर्य, आत्मविश्वास, ताकत, मांसपेशियों और अंगों के कुशल-संचालन एवं विलक्षण प्रयोग एवं शरीर का संतुलन बनाये रखने की दक्षता के कारण सहजता से चढ़ जाते थे।

भूप सिंह घोर परिश्रमी और धुन के पक्के थे। अपनी पत्नी शैली के सहयोग से बीच के पहाड़ को काटकर वे एक झरने की धारा मोड़ने में सफल हो गये थे। इस तरह उन्होंने अपने खेतों के लिए सिंचाई की व्यवस्था कर ली थी ओर अपनी जिन्दगी की एक नयी कहानी लिख डाली थी।

भूप सिंह अत्यंत स्वाभिमानी और स्वावलम्बी व्यक्ति थे। उन्होंने भाई रूप सिंह के प्रस्ताव को इसीलिए ठुकरा दिया था क्योंकि वे आराम की रोटी तोड़कर अपने स्वाभिमान को नष्ट नहीं करना चाहते थे। गाँव वालों ने उनकी बकरी को देवता की बलि चढ़ा दी थी। इसलिए वे उनसे रुष्ट हो गये थे। उनसे बोलना बंद कर दिया था और बिल्कुल अकेला जीवन व्यतीत करना अंगीकार कर लिया था।

□□□